Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, AUG-SEPT, 2022, VOL-10/53

प्रागैतिहासिक कला एवं संस्कृति: एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

तानीमा प्रिया[1] & अखिलेश रजक[2], Ph. D.

[1]शोध छात्रा इतिहास विभाग राधा गोविंद वि. वि. रामगढ़,

[2]शोध निर्देशक , सहायक प्रोफ़ेसर (इतिहास विभाग) राधा गोविंद वी. वी. रामगढ़, झारखंड

Paper Received On: 25 SEPTEMBER 2022

Peer Reviewed On: 30 SEPTEMBER 2022

Published On: 1 OCTOBER 2022

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास के कालक्रम का वह काल जिसके लिए कोई लिखित साधन उपलब्ध नहीं है,और जिस में मनुष्य का जीवन अपेक्षा कृत पूर्णता शब्द नहीं था उसे प्रागैतिहासिक काल कहलाता है। इतिहास का उस काल को ऐतिहासिक काल की संज्ञा देते हैं। इस काल में मानव का अस्तित्व तो था, परंतु लेखन कला का अविष्कार नहीं हुआ था। इस काल में मानव इतिहास की कई महत्वपूर्ण घटनाएं हुई जिसमें व्यक्ति हिमयुग से निकलकर आग पर स्वामित्व पाना, कृषि का अविष्कार करना इत्यादि शामिल है। इस काल में कला एवं संस्कृति का भी पर्याप्त विकास शुरु हो चुका था। जिसका प्रभाव भीमबेटका मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से ४५ किमी. पूरब तथा 10 किमी. के क्षेत्र में 800 शैलाश्रम (शेल्टर) मौजूद आज भी मिलते है। जैसलमेर से 500 सौ शैलाश्रयो में उच्च कोटि के चित्र पाए जाते हैं। भारत में 1000 ईसा पूर्व में बनाई गई चित्रकला को अर्कीबाल्डी कारलेली और जान कॉक वार्न ने कैमूर, (मिर्जापुर) पहाड़ी पेंटिंग के आकार को देश को अवगत कराया, तथा उसे अपनी पुस्तकों मे वर्णित किया।

प्रागैतिहासिक शब्द प्राग+इतिहास से मिल कर बना है। जिसका अर्थ है पूर्व युग के हजारों वर्ष पूर्व मानव गुफाओं में रहता था। वह वह जानवरों का शिकार कर ना केवल अपनी भूख मिटाता था,बल्कि इन्हीं गुफा की दीवारों पर मानव ने अपनी कला एवं संस्कृति को कला कौशल का परिचय खुद दीवारों पर कुरेदकर या रेखाओं को सहजता के साथ अंकित का दिया था l वही आज हमारे पूर्वजों के जीवन की वास्तविकता से परिचित करने का आधार प्राप्त हो रहा है। भारत में प्रागैतिहासिक गुफाएं

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जिनकी चट्टानों पर कलाकारी बनी हुई हैं, और आदमरवेतका गुफा, महादेवगुफा, उत्तरी कर्नाटका तथा आंध्र प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में देखने को मिलती है। जहां हाथी, चिता, गेंडा और जंगली सूअर के चित्र मिलते हैं। इसमें लाल एवं भूरे रंगों का प्रयोग किया गया है। कुछ चित्रों को चट्टानों को कुरेद कर बनाया गया है। इस काल में अधिकतर चित्र पशुओं की आकृति एवं शिकार करते हुए दिखाया गया है

यद्यपि प्रागैतिहासिक काल से प्राचीन भारतीय चित्रकला के अवशेष बहुत देशों में है। तथापि वह उसकी महानता को प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त है। वे उन कुछ गुफा मंदिरों में पूजित चित्रों में चित्रों के रूप में है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि, अधिकांश को मंदिर किस रुप मैं चित्रित किए जाते थे, और मूर्ति स्थापना का स्थान मे चमकीले रंगों में रंगा जाता था। जैसा कि प्रायः हिंदू मंदिरों में आज भी होता है और यत्र तत्र भित्ति चित्रों में भी विशेष कार्य योजना रहती है। धार्मिक उद्देश्यों के लिए अर्पित कुछ कृत्रिम गुफाएं चित्रकला अत्यधिक विकसित शैलियो के उदाहरण प्रस्तुत करती है। निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि अजंता के चित्र निर्मित इसमें से एक है। मध्य प्रदेश के ग्वालियर के पास विंध्य श्रेणी के पर्वत पर स्थित बाघ की गुफा के बरामदे की दीवारों पर चित्रित हाथियों के चित्र प्राचीन भारतीय चित्रकला की उत्कृष्टता की अति पराकाष्ठा है।

भारत में प्रागैतिहासिक काल की चित्रकला की खोज सर्वप्रथम अंग्रेजों ने की थी जो यहां शासन करने के लिए आए थे। इसका श्रेय आर्चीबाल्ड कार्लाइल तथा जॉन कॉक वर्न को दिया जा सकता है। विजयगढ़ दुर्ग के पास घिरमंगर नामक स्थान के पास का स्थान पर शैलाश्रय में गेंडे का शिकार का चित्र मिला है। यह चित्र एक बड़े पत्थर के बड़े भाग में अंकित है। जो शीला के पथरीले भाग के किनारे का खंडित भाग प्रतीत होता है इसमें गेंडे को छह पुरुष मारते हुए का चित्र मिला हुआ हैं। इलाहाबाद जिले के खैरागढ़ के दक्षिण भाग में भी चित्रित गुफाएं मिली है l १९११ मिर्जापुर गजेटियर में सोन, घाटी की चित्रित गुफाओं का सबसे प्राचीन मानव निवास स्थान बताया गया है।

भीमबेटका की गुफाओं से बड़ी मात्रा में पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं अधिकतर गुफाएं मध्य पाषाण काल की है। यह स्थिति ६०० से अधिक गुफाओं में से ४७५ मैं शीला चित्र प्राप्त हुए हैं। यहां के अधिकतर चित्र लाल तथा सफेद रंग के हैं। कुछ हरे और पीले रंगों में है। इसमें गेंडा, चीता, गाय बैल, नीलगाय, भैंस, भालू, बंदर, सांबर, हिरण, आदि पशुओं का कलात्मक अंकन किया गया है। एक चित्र में किसी जुलूस का चित्रण किया गया है। जिसमें अश्वरोही मनुष्य दिखाए गए हैं। भीमबेटका के शिलालेख शैली तथा विषय की दृष्टि से तत्कालीन मानव जीवन की सुंदर झांसी प्रस्तुत करते हैं। इसके मुख्य विषय है वन्य जीवों का आखेट परस्पर युद्ध करतें हुए मनुष्य या उसके धार्मिक अनुष्ठान पूजा आकृतियां इत्यादि का वर्णन मिलता हैं

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

बांदा के क्षेत्र

यहां पर सरतह मलवा, करियाकुंड, कवरा पहाड़, नवागढ़, कोतालड़ा एवं खरसिया आते हैं। सिंहनपुर के चित्र सबसे अच्छे होते हैं। चित्रकला के उत्कृष्ट नमूने पाए जाते हैं। मानिकपुर के शिलालेख में तीर, कमान धारी घुड़सवार तथा पहियाधारी लकरा गाड़ी में बैठे व्यक्ति का चित्रण किया गया है।

मिर्जापुर क्षेत्र

इसके अंतर्गत लखनिया दरी,कोहवर, पभोसा,लोहरी, रोप, कंडाकोट, सोरहो घाट, विजयगढ़, चुनार आदि क्षेत्र में इस तरह के चित्र मिलते है। लखनिया दरी के एक चित्र में कुछ घुड़सवार पालतू हाथी की सहायता से जंगली हाथी को पकड़ते हुए दिखाया गया है। एक अन्य चित्र घायल सूअर का है जो मुंह खोल कर अपनी पीड़ा को प्रदर्शित करते हुए दिखाया है।

रामगढ़ क्षेत्र

इसके अंतर्गत सिंहपुर कवरा पहाड़, नवागढ़, तोता लड़ा वह खरसिया के क्षेत्र आते हैं। इसमें भैंस, सूअर मुंह उठाए सूअर, भैंस इत्यादि पशुओं को चित्रित किया गया है। वैसे वहा पर कुछ व्यक्ति पशुओं पर आक्रमण करते हुए दिखाई देते हैं। यहां पर क्षेत्रांकन प्रकार के भी चित्र मिले हैं।

पंचमदि क्षेत्र

यह स्थल महादेव पर्वत श्रेणी में स्थित है। सबसे अधिक संख्या में चित्र यहीं पर मिलते हैं। यहां पर पशु शिकार के अतिरिक्त दैनिक जीवन से संबंधित चित्रकारी से संबंधित चित्रकारी की गई है। स्त्री पुरुष झुंड बना कर नाचते हुए दिखाये गए हैं।

होसंगावाद क्षेत्र

यह पंचमढ़ी से लगभग ४५ मील की दूरी पर नर्मदा नदी के रमणीय तट पर स्थित है। चित्रकला तथा स्थापत्य कला का यह बेजोड़ नमूना है। प्रागैतिहासिक कालीन संस्कृति का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि यहां इस काल में निम्न लिखित संस्कृति अपनी विकास के पथ पर अग्रसर हुई है थी।

मालवा संस्कृति

यह संस्कृति उत्कृष्ट प्रकार के मृदभांडो के लिए जानी जाती है। यहां से दूधियारंग वाले अवशेष पाए गए हैं। इसके अलावा काले तथा लाल रंग के बर्तन भी प्राप्त हुए हैं।

वुर्जहोम संस्कृति

वुर्जहोम श्रीनगर के पुरातात्विक महत्व वाला कश्मीर का प्रमुख ऐतिहासिक स्थल है। यहां पर कई प्रकार के भूमिगत गड्ढे पाए गए हैं। वे लोग इस गड्ढों को अंदर से ढक कर उसमें रहते थे। यहां के घरों का निर्माण जमीन के स्तर से ऊपर ईंट तथा गारे से किया जाता था। यहां के लोग खेती भी करते थे।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

वुर्जहोम मे मालिक के मर जाने पर बकरी तथा अन्य जानवरों को उसके साथ ही दफनाया जाता था। यहां से हड्डी के विशिष्ट औजार, आयताकार चित्रित चाकू के औजार, पशु तथा पत्थर के उपकरण प्राप्त हुए हैं। इसी तरह कश्मीर के गुफाओं में भी पशुपालन तथा कृषि करने के प्रमाण मिले हैं। इस काल में मानवों का समाजिकता का वातावरण काफी अलग था। अक्सर मानव छोटे छोटे कबीलों में रहते थे ,तथा उनको जंगली जानवरों से जूझते हुए शिकारी-फॉर्मर जीवन को व्यतीत करना पड़ता था।

प्रागैतिहासिक कालीन कला एवं संस्कृति की विशेषताएं

पूर्व, मध्य काल तथा उत्तर पूर्व पाषाण युग को सामूहिक रूप से प्रागैतिहासिक काल की संज्ञा दी जाती है, जब मानव ने प्रगति की दिशा में कदम बढ़ाया तब एक समय ऐसा आया जब उसे मात्र पत्थर के प्रयोग से विरक्ति होने लगीं l परिणाम स्वरूप अब धातु युग का प्रादुर्भाव हुआ ,जिसे धातु युग के नाम से जाना जाता है। इस काल की सभ्यता से अनेक प्रकार के लिखित प्रमाण संस्कृत भाषा में आज भी प्राप्त हुए हैं इस काल को आखेट काल या खाद्य संग्रहण काल के नाम से भी जाना जा सकता है महाराष्ट्र के "बोरी" नामक स्थान पर खुदाई से प्राप्त अवशेषों में मानव की हजारों लाखों वर्ष पूर्व की उपस्थिति का भी प्रमाण मिला है l उस समय सामान्य पत्थरों को पूर्व तथा फ्लेक्स पद्धति के द्वारा बनाए गए चित्रों का वर्णन देखने को मिलता है मद्रास तथा चेन्नई से प्राप्त कला के चित्र सिंगरौली घाटी मिर्जापुर इलाहाबाद की बेलन घाटी में इस सभ्यता का प्रमाण मिला है जिसमें कला एवं संस्कृति को एक आधार प्रदान किया है इस युग की भारतीय संस्कृति की उपरोक्त निरूपण द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है, कि इस धरती पर प्रकट होने वाले आदिमानव के उत्तरोत्तर प्रगति की अविष्कारो तथा नवीन खोजो की जिज्ञासा से ओतप्रोत मानव ने सभ्यता और संस्कृति के विकास को अपूर्व शक्ति प्रदान किया। समय बीतता रहा, विकास ने उन्नति किया और । मानव जीवन मे कालांतर मे काफी परिवर्तन देखने को मिला l जो समय के हिसाब से काफ़ी रोचक रहा मध्य काल तक इंसान मे वेदना, घृणा और जीवन इच्छा के प्रति जो परिवर्तन हुआ वह धीरे धीरे बहुरूपी हो गया। इस प्रकार प्रागैतिहासिक समरूपता संस्कृति कला समृद्धि की निरंतरता एक का व्यापक आधार संस्कृति के अनेक रूप और गुण मे कालांतर मे दिखने लगा l इस काल के बाद ही मानव जीवन में एक नवीनता विकास की भावना का संचार हुआ l तथा लोगों मे सामाजिक सोच का दायरा बढ़ना शुरू हो गया। आगे जैसे-जैसे अध्ययन होता जाएगा प्रागैतिहासिक काल की कला एवं संस्कृति का एक नया अध्याय जुड़ता जाएगा जो भविष्य में अध्ययन करने वाले इतिहास वेत्ताओ के लिए इतिहास को जानने समझने और अपनी गौरव पूर्ण संस्कृति को एक नया आयाम मिलेगा l

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संदर्भ ग्रंथ सूची

मुखर्जी, रविन्द्र नाथ , सामाजिक मानव शास्त्र की रूपरेखा आगरा प्रकाशन चतुर्थ भाग
बोस,एन. के. कल्चर एंडसोसाइटी इन इंडिया, 1962, मुंबई।
लुनिया ,वी. एस., प्राचीन भारतीय संस्कृति आगरा 1966, 1977 l
इलियट, टी. एस. द डेफिनेशन ऑफ कल्चर 1948, इंग्लैंड।
मेन स्प्रिंगर ऑफ सिविलाइजेशन ,न्यूयॉर्क 1945 l
रूथ बेनेडिक्ट, पैटर्न ऑफ कल्चर बोस्टन 1934 l
रामधारी सिंह दिनकर संस्कृति के चार अध्याय,1956 l
पंत, निवेदिता ,अथर्ववेद का पुराण अध्ययन, ईस्टर्न बुक डिपो आगरा 2013 l
कंबोज, डॉ. जियालाल ऋग्वेद संहिता विद्या निधि प्रकाशन दिल्ली 2004

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language